# CUET 2026 May 15 Hindi Shift 1

## Question Paper (Memory-Based) with Solutions

Conducted by National Testing Agency (NTA)

### General Instructions

1. The examination will be conducted in Computer-Based Test (CBT) mode.
2. Each question carries +5 marks for correct answer and -1 mark for wrong answer.
3. The total number of questions are 50.
4. Duration of the exam is 1 hour (60 minutes).

**1. 'निर्दोष आँखों में भविष्य की सुखद आशाओं का सागर लहरा रहा था।' लेखक के इस कथन का क्या आशय है ?**

(1) बालक को अपनी अम्मा की बातों पर पूरा भरोसा है।
(2) बालक अपने अच्छे भविष्य के प्रति आशावान है।
(3) उसे अपने निर्दोष होने का विश्वास है।
(4) उसकी आँखें वर्तमान पर टिकी हुई हैं।

**Correct Answer:** (2) बालक अपने अच्छे भविष्य के प्रति आशावान है।

**Solution:**

**Concept:**
साहित्यिक भाषा में लेखक अपनी भावनाओं और विचारों को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रतीकों, रूपकों तथा भावात्मक अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं। यहाँ "सुखद आशाओं का सागर" एक रूपकात्मक अभिव्यक्ति है, जो बालक के मन में भविष्य को लेकर उपस्थित असीम उत्साह, सपनों और सकारात्मक कल्पनाओं को व्यक्त करती है। "निर्दोष आँखें" बालक की निष्कपटता, सरलता और पवित्र मानसिकता का प्रतीक हैं।
**Step 1:** 'सुखद आशाओं का सागर' का अर्थ समझना।

लेखक ने यहाँ "सागर" शब्द का प्रयोग आशाओं की विशालता और गहराई को प्रकट करने के लिए किया है। जिस प्रकार समुद्र अथाह और अनंत होता है, उसी प्रकार बालक के मन में भी भविष्य को लेकर अनेक सुंदर कल्पनाएँ और आकांक्षाएँ हैं। "लहरा रहा था" शब्द यह संकेत करता है कि उसके मन में उत्साह, आनंद और उमंग की तरंगें उठ रही थीं।
**Step 2:** 'निर्दोष आँखों' का भावार्थ।

"निर्दोष आँखें" बालक की मासूमियत को दर्शाती हैं। बालक जीवन की कठिनाइयों और छल-कपट से अनभिज्ञ होता है। उसके मन में भविष्य को लेकर केवल आशा और प्रसन्नता होती है। वह यह विश्वास करता है कि आने वाला समय उसके लिए सुखद और उज्ज्वल होगा।
**Step 3:** सही विकल्प का चयन।

विकल्प (2) में कहा गया है कि "बालक अपने अच्छे भविष्य के प्रति आशावान है।" यही बात लेखक की पंक्ति का वास्तविक भाव स्पष्ट करती है। यहाँ मुख्य जोर भविष्य की सुखद संभावनाओं पर है।
**Step 4:** अन्य विकल्पों का परीक्षण।

विकल्प (1) में माँ पर भरोसे की बात कही गई है, जबकि मूल कथन का केंद्र "भविष्य की आशाएँ" हैं। विकल्प (3) में निर्दोष होने के विश्वास की बात है, परंतु यहाँ निर्दोषता केवल बालक की मानसिक अवस्था को बताती है। विकल्प (4) पूरी तरह गलत है क्योंकि कथन में वर्तमान नहीं बल्कि भविष्य की कल्पनाओं की चर्चा की गई है।
**Conclusion:**
अत: लेखक का आशय यह है कि बालक अपने उज्ज्वल और सुखद भविष्य के प्रति अत्यंत आशावान है।

**Quick Tip:** भावार्थ वाले प्रश्नों में मुख्य शब्दों पर विशेष ध्यान दें। यहाँ "भविष्य", "सुखद आशाएँ" और "सागर" जैसे शब्द सीधे आशावादी दृष्टिकोण की ओर संकेत करते हैं।

**2. सुमेलित कीजिए :**

| सूची I (विच्छेद) | सूची II (संधि पद) |
|---|---|
| A. कवि + इंद्र | I. समासोक्ति |
| B. मृग + इंद्र | II. तत्काल |
| C. समास + उक्ति | III. कवींद्र |
| D. तद् + काल | IV. मृगेंद्र |

**Choose the correct answer from the following options:**

(1) A-IV, B-III, C-II, D-I
(2) A-I, B-II, C-III, D-IV
(3) A-III, B-IV, C-I, D-II
(4) A-III, B-I, C-II, D-IV

**Correct Answer:** (3) A-III, B-IV, C-I, D-II

**Solution:**

**Concept:**
संधि का अर्थ है दो वर्णों या शब्दों के मेल से होने वाला ध्वन्यात्मक परिवर्तन। संस्कृत तथा हिंदी व्याकरण में संधि के विभिन्न प्रकार होते हैं, जैसे स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि। इस प्रश्न में मुख्यत: दीर्घ संधि, गुण संधि तथा व्यंजन संधि के नियमों का प्रयोग हुआ है।
**Step 1:** `कवि + इंद्र' का विश्लेषण।

यहाँ "कवि" शब्द का अंतिम स्वर "इ" है तथा "इंद्र" शब्द का प्रथम स्वर भी "इ" है। दीर्घ संधि के नियम के अनुसार:

+ =

अत: :

+ =

इस प्रकार A का मिलान III से होगा।
**Step 2:** `मृग + इंद्र' का विश्लेषण।

यहाँ "मृग" के अंत में "अ" स्वर निहित है तथा "इंद्र" का प्रारंभ "इ" से हो रहा है। गुण संधि के नियम के अनुसार:

+ =

अत: :

+ =

अत: B का मिलान IV से होगा।
**Step 3:** `समास + उक्ति' का विश्लेषण।

यहाँ "समास" के अंत में "अ" तथा "उक्ति" के प्रारंभ में "उ" है। गुण संधि के अनुसार:

+ =

अत: :

+ =

अत: C का मिलान I से होगा।
**Step 4:** `तद् + काल' का विश्लेषण।

यह व्यंजन संधि का उदाहरण है। "द्" के बाद "क" आने पर "द्" का परिवर्तन "त्" में हो जाता है।

+ =

 © Collegedunia.com

अतः D का मिलान II से होगा।
**Conclusion:**
सही क्रम A-III, B-IV, C-I, D-II है। इसलिए सही उत्तर विकल्प (3) है।

**Quick Tip:** दीर्घ संधि: इ + इ = ई

गुण संधि: अ + इ = ए तथा अ + उ = ओ

व्यंजन संधि में ध्वनि परिवर्तन विशेष नियमों के अनुसार होता है।

---

**3. तपः + वन का संधि युक्त शब्द होगा :**

(1) तपस्वन

(2) तपर्यवन

(3) तपोवन

(4) तपवन

**Correct Answer:** (3) तपोवन

**Solution:**

**Concept:**
यह प्रश्न विसर्ग संधि पर आधारित है। विसर्ग संधि में विसर्ग (ः) के बाद आने वाले वर्ण के अनुसार ध्वनि परिवर्तन होता है। संस्कृत और हिंदी व्याकरण में यह अत्यंत महत्वपूर्ण संधि मानी जाती है।
**Step 1:** विसर्ग संधि के नियम को समझना।

यदि विसर्ग से पहले "अ" स्वर हो और उसके बाद कोई घोष व्यंजन (जैसे य, र, ल, व, भ आदि) आए, तो विसर्ग "ओ" में परिवर्तित हो जाता है।
**Step 2:** `तपः + वन' पर नियम लागू करना।

"तपः" शब्द में विसर्ग से पहले "अ" स्वर है और दूसरा शब्द "वन" 'व' से शुरू हो रहा है, जो एक घोष व्यंजन है।
अतः नियम के अनुसार:

+ =

यहाँ विसर्ग का परिवर्तन "ओ" में हो गया।
**Step 3:** अन्य विकल्पों का परीक्षण।

"तपस्वन" और "तपर्यवन" व्याकरणिक दृष्टि से अशुद्ध हैं। "तपवन" में विसर्ग का सही परिवर्तन नहीं हुआ है।
अतः "तपोवन" ही सही संधि पद है।
**Conclusion:**
संधि के नियमों के अनुसार "तपः + वन" का सही रूप "तपोवन" होगा।

**Quick Tip:** नियम याद रखें: **अः + व/र/ल/य/घोष व्यंजन = ओ**
उदाहरण: मनः + रथ = मनोरथ यशः + दा = यशोदा

---

**4. 'शिरोभूषण' का संधि-विच्छेद होता है :**

(1) शिर: + आभूषण

(2) शिर: + भूषण

(3) शिरा + भूषण

(4) शिरे + भूषण

**Correct Answer:** (2) शिर: + भूषण

**Solution:**

**Concept:**
'शिरोभूषण' शब्द **विसर्ग संधि** का उदाहरण है। विसर्ग संधि में जब किसी शब्द के अंत में विसर्ग (ः) हो और उसके बाद कोई विशेष प्रकार का वर्ण आए, तब विसर्ग में परिवर्तन हो जाता है। यहाँ विसर्ग के स्थान पर 'ओ' का आगमन हुआ है।
**Step 1:** मूल शब्दों की पहचान करना।

'शिरोभूषण' शब्द को ध्यान से देखने पर इसमें दो भाग दिखाई देते हैं —

शिरो + भूषण

यहाँ 'भूषण' का अर्थ है आभूषण या गहना तथा 'शिर:' का अर्थ है सिर।
अत: मूल शब्द होंगे :

शिर: + भूषण

**Step 2:** विसर्ग संधि के नियम को समझना।

विसर्ग संधि का नियम कहता है कि यदि विसर्ग से पहले 'अ' स्वर हो तथा विसर्ग के बाद कोई घोष व्यंजन (जैसे ग, घ, ज, द, ध, ब, भ आदि) आए, तो विसर्ग का रूप बदलकर 'ओ' हो जाता है।
यहाँ :

शिर: + भूषण

में विसर्ग से पहले 'अ' ध्वनि है तथा बाद में 'भ' वर्ण है, जो एक घोष व्यंजन है।
अत: :

$$+ \rightarrow +$$

इस प्रकार:

शिर: + भूषण → शिरोभूषण

**Step 3:** अन्य विकल्पों का परीक्षण।

**विकल्प (1):** 'शिर: + आभूषण' व्याकरण की दृष्टि से इस शब्द का सही विच्छेद नहीं है क्योंकि इससे बनने वाला रूप भिन्न होगा।

**विकल्प (3):** 'शिरा' शब्द यहाँ अर्थ की दृष्टि से अनुपयुक्त है।

**विकल्प (4):** 'शिरे' कोई उपयुक्त मूल रूप नहीं है।

इसलिए सही उत्तर केवल:

$$\boxed{\text{शिर: + भूषण}}$$

है।

**Quick Tip:** यदि किसी शब्द में 'ओ' के बाद घोष व्यंजन आए, तो अक्सर उसका विच्छेद विसर्ग (ः) से किया जाता है।
उदाहरण: मनोहर = मन: + हर, शिरोभूषण = शिर: + भूषण।

---

**5. नीरोग का संधि-विच्छेद होगा :**

(1) निर + रोग

(2) नि + रोग

(3) निः + रोग

(4) नी + रोग

**Correct Answer:** (3) निः + रोग

**Solution:**

**Concept:**
यह प्रश्न **विसर्ग संधि** से संबंधित है। विसर्ग संधि में कई बार विसर्ग लुप्त हो जाता है और उसके पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है। 'नीरोग' शब्द इसी नियम पर आधारित है।
**Step 1:** मूल शब्दों की पहचान।

'नीरोग' शब्द का अर्थ है —

जिसे कोई रोग न हो

इसका मूल रूप है :

निः + रोग

यहाँ 'निः' उपसर्ग है जिसका अर्थ है 'रहित' या 'बिना'।
**Step 2:** विसर्ग संधि का नियम लागू करना।

नियम: यदि विसर्ग (ः) के बाद 'र' वर्ण आए, तो विसर्ग लुप्त हो जाता है तथा उससे पहले का ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है।
यहाँ :

निः + रोग

में:

+ +

उपस्थित है।
नियमानुसार:

→

और विसर्ग हट जाता है।
अतः :

निः + रोग → नीरोग

**Step 3:** अन्य विकल्पों का विश्लेषण।

**विकल्प (1):** 'निर + रोग' हिंदी प्रयोग में दिख सकता है, पर संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से मूल रूप 'निः' ही होगा।

**विकल्प (2):** इसमें विसर्ग अनुपस्थित है, इसलिए यह अधूरा है।

**विकल्प (4):** यह केवल ध्वनि रूप है, व्याकरणिक विच्छेद नहीं।

अतः सही उत्तर:

$\boxed{\text{निः + रोग}}$

है।

**Quick Tip:** नियम याद रखें:

निः + र → नीर

उदाहरण: नीरव = निः + रव, नीरस = निः + रस।

**6. 'अति' उपसर्ग का उदाहरण है :**

(1) अटल

(2) अंतर्गत

(3) अंतर्यामी

(4) अत्यल्प

**Correct Answer:** (4) अत्यल्प

**Solution:**

**Concept:**
उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं जो किसी मूल शब्द के पहले लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। 'अति' एक प्रसिद्ध संस्कृत उपसर्ग है जिसका अर्थ होता है —

बहुत अधिक, सीमा से परे

**Step 1:** 'अत्यल्प' शब्द का विश्लेषण।

'अत्यल्प' शब्द का अर्थ है —

बहुत कम

इसका विच्छेद होगा :

अति + अल्प

यहाँ 'अति' उपसर्ग है तथा 'अल्प' मूल शब्द है।
**Step 2:** यण संधि का प्रयोग समझना।

'अति' का अंतिम स्वर 'इ' है तथा 'अल्प' का पहला स्वर 'अ' है।
यण संधि के नियम के अनुसार:

$+ \rightarrow$

अतः :

अति + अल्प → अत्यल्प

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'अत्यल्प' में 'अति' उपसर्ग प्रयुक्त हुआ है।
**Step 3:** अन्य विकल्पों का परीक्षण।

**अटल :** इसमें 'अ' उपसर्ग है।

**अंतर्गत :** इसमें 'अन्तर्' उपसर्ग है।

**अंतर्यामी :** इसमें भी 'अन्तर्' उपसर्ग है।

केवल 'अत्यल्प' में 'अति' उपसर्ग है।

**Quick Tip:** 'अत्य' से शुरू होने वाले शब्दों में प्रायः 'अति' उपसर्ग होता है।
जैसे : अत्याचार, अत्यंत, अत्यल्प।

---

**7. निम्नलिखित में उपसर्ग रहित शब्द है :**

(1) निश्चय

(2) अवधि

(3) उनासी

(4) राजनीति

**Correct Answer:** (4) राजनीति

**Solution:**

**Concept:**
उपसर्ग रहित शब्द वह होता है जिसमें किसी उपसर्ग का प्रयोग न हुआ हो। ऐसा शब्द या तो मूल शब्द होता है अथवा दो स्वतंत्र शब्दों के मेल से बना सामासिक शब्द होता है।
**Step 1:** उपसर्गयुक्त शब्दों की पहचान।

**निश्चय :**

निः + चय

यहाँ 'निः' उपसर्ग है।

**अवधि :** इसमें 'अव' उपसर्ग माना जाता है।

**उनासी :** यहाँ 'उन' का अर्थ है 'एक कम'। अतः यह भी उपसर्गयुक्त रूप माना जाता है।
**Step 2:** 'राजनीति' शब्द का विश्लेषण।

'राजनीति' शब्द दो स्वतंत्र शब्दों से मिलकर बना है :

राज + नीति

यह एक सामासिक शब्द है। यहाँ 'राज' कोई उपसर्ग नहीं है, बल्कि स्वतंत्र अर्थ वाला शब्द है।
अतः 'राजनीति' उपसर्ग रहित शब्द है।
**Step 3:** सही निष्कर्ष।

क्योंकि विकल्प (4) में किसी उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है, इसलिए वही सही उत्तर है।

**Quick Tip:** यदि शब्द का पहला भाग स्वयं में पूर्ण अर्थ देता हो, तो वह उपसर्ग नहीं बल्कि स्वतंत्र शब्द हो सकता है।
जैसे : राजनीति = राज + नीति।

---

**8. सुमेलित कीजिए :**

| उपसर्ग | मूल शब्द |
|---|---|
| A. निर् | I. बन |
| B. दुस् | II. यात |
| C. अन | III. रोध |
| D. नि | IV. साध्य |

(1) A-II, B-IV, C-I, D-III

(2) A-I, B-IV, C-III, D-II

(3) A-II, B-I, C-III, D-IV

(4) A-IV, B-III, C-II, D-I

**Correct Answer:** (1) A-II, B-IV, C-I, D-III

 © Collegedunia.com

**Solution:**

**Concept:**
उपसर्ग किसी मूल शब्द के पहले लगकर नया अर्थ प्रदान करते हैं। सही मिलान करने के लिए यह देखना आवश्यक है कि कौन-सा उपसर्ग किस मूल शब्द के साथ मिलकर प्रचलित शब्द बनाता है।
**Step 1:** 'निर्' का सही मिलान।

'निर्' + 'यात'

निर्यात

अर्थ: बाहर भेजना (Export)
अतः :

$$A \to II$$

**Step 2:** 'दुस्' का सही मिलान।

'दुस्' + 'साध्य'

दुस्साध्य

अर्थ: अत्यंत कठिन।
अतः :

$$B \to IV$$

**Step 3:** 'अन' का सही मिलान।

'अन' + 'बन'

अनबन

अर्थ: मनमुटाव।
अतः :

$$C \to I$$

**Step 4:** 'नि' का सही मिलान।

'नि' + 'रोध'

निरोध

अर्थ: रोकना।
अतः :

$$D \to III$$

**Conclusion:**
सही क्रम:

$$A - II,\ B - IV,\ C - I,\ D - III$$

है।

**Quick Tip:** कुछ सामान्य उपसर्ग याद रखें:
निर् = बाहर/बिना
दुस् = कठिन/बुरा
नि = नीचे/रोक
अन = अभाव/नहीं

---

**9. 'सत्याग्रह' का समास विग्रह होगा :**

(1) सत्य का आग्रह

(2) सत्य से आग्रह

 © Collegedunia.com

(3) सत्य के लिए आग्रह

(4) सत्य प्राप्ति का आग्रह

**Correct Answer:** (3) सत्य के लिए आग्रह

**Solution:**

**Concept:**
'सत्याग्रह' शब्द **तत्पुरुष समास** का उदाहरण है। तत्पुरुष समास में दोनों पदों के बीच की विभक्ति लुप्त हो जाती है और विग्रह करते समय उसे पुनः जोड़ा जाता है।
**Step 1:** शब्द के अर्थ को समझना।

'सत्याग्रह' शब्द महात्मा गांधी द्वारा प्रसिद्ध किया गया था। इसका अर्थ है —

सत्य के लिए आग्रह

अर्थात सत्य की स्थापना हेतु दृढ़ आग्रह करना।
**Step 2:** कारक संबंध की पहचान।

यहाँ आग्रह का उद्देश्य 'सत्य' है।
जब किसी कार्य का उद्देश्य बताया जाए, तब 'के लिए' संबंध बनता है। इसे **संप्रदान तत्पुरुष** कहते हैं।
अतः :

सत्य के लिए आग्रह

सही विग्रह है।
**Step 3:** अन्य विकल्पों का विश्लेषण।

**सत्य का आग्रह :** यह संबंध तत्पुरुष जैसा प्रतीत होता है, पर मूल भाव नहीं देता।

**सत्य से आग्रह :** अर्थ की दृष्टि से गलत है।

**सत्य प्राप्ति का आग्रह :** यह व्याख्यात्मक अर्थ है, शाब्दिक विग्रह नहीं।

इसलिए सही उत्तर विकल्प (3) है।

**Quick Tip:** यदि किसी समास में उद्देश्य या प्रयोजन का भाव हो, तो विग्रह में प्रायः 'के लिए' आता है।
जैसे : देशभक्ति = देश के लिए भक्ति।

---

**10. सुमेलित कीजिए :**

| शब्द | समास का नाम |
|---|---|
| A. ऊँच-नीच | I. बहुव्रीहि समास |
| B. पंचामृत | II. द्वंद्व समास |
| C. मुरलीधर | III. अव्ययीभाव समास |
| D. यथाशक्ति | IV. द्विगु समास |

(1) A-II, B-IV, C-I, D-III

(2) A-IV, B-III, C-II, D-I

(3) A-II, B-I, C-III, D-IV

(4) A-I, B-II, C-III, D-IV

 © Collegedunia.com

**Correct Answer:** (1) A-II, B-IV, C-I, D-III

**Solution:**

**Concept:**
समास में दो या अधिक शब्द मिलकर एक नया शब्द बनाते हैं। शब्दों की संरचना और प्रधानता के आधार पर समास के विभिन्न प्रकार होते हैं।
**Step 1:** 'ऊँच-नीच' की पहचान।

यहाँ दोनों पद समान रूप से प्रधान हैं। विग्रह:

ऊँच या नीच

ऐसे समास को **द्वंद्व समास** कहते हैं।
अत: :

$$A \to II$$

**Step 2:** 'पंचामृत' की पहचान।

'पंच' संख्या सूचक शब्द है।

पाँच अमृतों का समूह

संख्यावाचक पूर्वपद होने के कारण यह **द्विगु समास** है।
अत: :

$$B \to IV$$

**Step 3:** 'मुरलीधर' की पहचान।

विग्रह:

मुरली धारण करने वाला

यहाँ किसी तीसरे व्यक्ति अर्थात श्रीकृष्ण का बोध हो रहा है।
अत: यह **बहुव्रीहि समास** है।

$$C \to I$$

**Step 4:** 'यथाशक्ति' की पहचान।

विग्रह:

शक्ति के अनुसार

'यथा' अव्यय शब्द है तथा वही प्रधान है।
अत: यह **अव्ययीभाव समास** है।

$$D \to III$$

**Conclusion:**
सही क्रम:

$$A - II,\ B - IV,\ C - I,\ D - III$$

है।

**Quick Tip:** समास पहचानने के सूत्र:
दोनों पद प्रधान = द्वंद्व
संख्या से शुरुआत = द्विगु
तीसरे अर्थ का बोध = बहुव्रीहि
अव्यय प्रधान = अव्ययीभाव

 © Collegedunia.com